अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय -द्वितीय
संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

2.2 साहित्य के पुनरावलोकन का महत्व

2.3 पूर्व शोध कार्य का आंकलन

2.3.1 भारत में किया गया अनुसंधान कार्य

2.3.2 भारत में किया गया अनुसंधान कार्य

2.3.3 एम.एड्. छात्रों द्वारा किया गया अनुसंधान कार्य

अध्याय –द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना –

ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता की ज्ञान की सीमा कहा पर हैं वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है। सतत् मानवीय प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान में मिल सकता है। संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येंक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। किसी भी क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान करता है तो उसमे संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन करना अनिवार्य होता है। पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य नवीन समस्याओं का पता चलता है।

साहित्य का पुनरावलोकन शोधकार्य के लिए आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य प्रक्रिया हैं, क्योंकि यह व्याख्या की जानेवाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है।

2.2 साहित्य के पुनरावलोकन का महत्व

- यदि अवलोकन न किया जाये तो अनुशोधन कार्य पहले किसी अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा अच्छी तरह से किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।
- ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह आवश्यक है कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है।
- पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।

❖ सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दशाओं में करने की आवश्यकता होती है।

2.3 पूर्व शोध का आंकलन–

अनुसंधान के क्षेत्र में पूर्व में अधिगम शैली विषय को समस्या बनाकर अनेक अनुसंधानकर्ता द्वारा इस विषय पर शोधकार्य किया गया है। उन शोधकार्यो को इस अध्याय में संबंधित साहित्य के रूप में लिया गया है।

2.3.1 भारत में किया गया अनुसंधान कार्य–

1. **इन्द्रपुरकर (1968) –**

चन्द्रपुर के माध्यमिक विद्यालयों की भाषा संबंधित गलतियों का अध्ययन। निष्कर्ष– 1 छात्र के द्वारा शब्दों को बोलने में बार–बार गलतियाँ होती हैं। 2. मौखिक परीक्षण द्वारा यह भी पाया कि शब्दों के उच्चारण में भी बार–बार त्रुटियाँ होती हैं। 3. लिखित परीक्षण से यह पाया कि बच्चे सुनकर सही शब्द नही लिख पाते हैं।

2. **पवौरी जी.सी. (1979) –**

हिन्दी व्याकरण पर अभिक्रमित अधिगम की विभिन्न शैलियों की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य निम्न है– कक्षा 8 के विद्यार्थियों की 'संधि' (व्याकरण पाठ) की उपलब्धि पर अभिक्रमित अधिगम की विभिन्न शैलियों का अध्ययन करना, विद्यार्थियों को पढ़ाई जानेवाली 'संधि' पर अभिक्रमित अधिगम की शैलियों के प्रभाव का अध्ययन उनके लिंग के आधार पर करना। इस अध्ययन में प्राप्त हुए प्रमुख निष्कर्ष है हिन्दी व्याकरण में आई संधि के शिक्षण पर रेखीय अभिक्रमित अधिगम शैली ज्यादा प्रभावशाली रही तथा अभिक्रमित अधिगम की विभिन्न शैलियों का लिंग भेद के आधार पर कोई अंतर नहीं पाया गया।

3. सरसम्मा एस (1984) –

कर्नाटक के कक्षा 8वीं के अहिन्दी भाषी छात्रों पर हिन्दी के आधारभूत शाब्दिक संग्रह का अध्ययन। उद्देश्य–1 कक्षा आठ के विद्यार्थियों की हिन्दी शब्दकोश की जानकारी का अध्ययन करना। 2. कक्षा छटवी एवं सातवी के पाठ्यपुस्तक में दिए गये शब्दों का कक्षा 7 के विद्यार्थियों की समझ का अध्ययन करना। 3. कक्षा 4 में शिक्षक की विद्यार्थियों द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले विभिन्न शब्दों का अध्ययन करना। निष्कर्ष–1 छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि में काई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। परन्तु छात्राओं की उपलब्धि थोड़ी सी उच्च थी। 2. अंग्रेजी व कन्नड़ माध्यम के विद्यार्थियों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया परन्तु अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की उपलब्धि में ज्यादा दृढ़ता पाई गई। 3. सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

4. आनन्द (1985) –

कक्षा 5 के विद्यार्थियों का लेखन में प्रभाव एवं वर्तनी संबंधी त्रुटियों का निदान दिल्ली के हिन्दी माध्यम के विद्यालय के कक्षा 5 के विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी में की गई त्रुटियों को पहचानना। 3. त्रुटियों के संभवित कारणों का अध्ययन करना। 3. एक उपचारात्मक कार्यक्रम को तैयार करके उसका विद्यार्थियों के ऊपर पड़नेवाले प्रभाव का अध्ययन करना। निष्कर्ष– वर्तनी में गलती का कारण मुख्यतः सही तरीके से न बोलना। अक्षरों का सही उच्चारण उम्र के बढ़ने से कोई सुधार का न होना पाया गया। इसका कारण उच्चारण को सही क्षमता की जागृति पढ़ाने की कमी के द्वारा होना पाया गया ना कि उम्र के अंतर से सबसे अधिक भूलने का कारण अक्षरों का अनुचित रूप से व्यवहार में लाना।

5. गुप्ता (1997) –

वैकल्पिक शालाओं का बाह्य मूल्यांकन संबंधी प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, यह अध्ययन भाषा की सोचनीय स्थिति को दर्शाता हैं, छात्रों की उपलब्धि का प्रतिशत भाषा शिक्षण की असलियत प्रकट करता हैं। इस अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि कुल छात्रों 407 में से 68.8 प्रतिशत छात्रों की उपलब्धि 50 प्रतिशत से कम हैं। 28.5 प्रतिशत छात्रों ने 80 प्रतिशत से कम एवं 51 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित किये हैं। तथा मात्र 2.94 प्रतिशत छात्रों ने 80 प्रतिशत से ज्यादा अंक अर्जित किये हैं।

6. गुप्ता के.बी. (1998) –

कक्षा 2 के विद्यार्थियों की भाषा और गणित में अधिगम कठिनाईयों की प्रकृति का अध्ययन। निष्कर्ष– यह पाया गया कि पढ़ने तथा लिखने में बच्चें बहुत गलतियाँ करते हैं। मौखिक रूप से पठन प्रक्रिया में बच्चे बहुत कमजोर पाए गए बहुत से बच्चे गद्यांश के प्रथम वाक्य को भी नहीं पढ़ सके। बच्चें शब्दों तथा वाक्यों की पहचान में सभी बहुत सी त्रुटियाँ करते है, पढ़ने के कौशल की तुलना में सुनने का कौशल बच्चों में अधिक था। बच्चों की कम उपस्थिति, अभिभावकों का कम शिक्षित होना तथा गरीब होना भी अधिगम कठिनाई के प्रमुख कारण हैं।

2.3.2 एम.एड् छात्रों द्वारा किया गया अनुसंधान कार्य –

1. शुक्ला अनामिका (1993)–

" माध्यमिक स्तर के छात्रों की अधिगम शैली और उच्च एवं निम्न सफलता का अध्ययन " इस विषय पर कार्य किया। उनके मुख्य उद्देश्य उच्च एवं निम्न सफलता प्राप्ति में अधिगम शैली की भूमिका अहम् है।

2. श्रीवास्तव प्रज्ञा(1994)–

“कक्षा 5 के विद्यार्थियों की गणित विषयक उपलब्धि एवं अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन” इस विषय पर कार्य किया। उनके मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया को जानता था।

3. श्रीवास्तव मिनी(1999)

“प्राथमिक शिक्षा के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा उपलब्धि एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन” इस विषय पर कार्य किया गया। उनके मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की कठिनाईयों को जानकर निराकरण करना है।

4. गुप्ता एस.के. चुगताई (2000)–

हिन्दी भाषा की अधिगम में अधियोग्यता की प्रकृति का परीक्षण किया। इस अध्ययन का उद्देश्य बच्चों में हिन्दी भाषा के अधिगम योग्यता के दर की पहचान करना है, उद्देश्य प्राप्ति के लिए इस अध्ययन में डायग्नोस्टिक टेस्ट का निर्माण किया गया हैं। इस परीक्षण भाषा के निम्नलिखित घटक लिए गये है– ध्वनी संबंध, संशासन, शब्द भण्डार, अर्थगत, वाक्य विन्यास, पढ़ना एवं लिखना।

5. भाटिया (2003)–

“दशमलव में आनेवाली अधिगम कठिनाईयों की पहचान” पर कार्य किया। उनके मुख्य उद्देश्य थे– कक्षा 5 के विद्यार्थियों की अधिगम कठिनाईयों की पहचान करना।

6. दिनेश शर्मा (2006) –

“कक्षा 7 के विद्यार्थियों को रेखा गणित में होनेवाली अधिगम कठिनाईयों का अध्ययन” इस विषय पर कार्य किया गया। उनके मुख्य उद्देश्य– शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का वास्तविक स्थिति को ज्ञात करना है।